International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

शीर्षक :- पश्चिमी यथार्थवाद से पूर्व : कौटिल्य, महाभारत और नीति ग्रंथों में वर्णित 'राजमण्डल' और 'सप्तांग' सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता।

धनंजय दुबे[1], प्रो. ममता मणि त्रिपाठी[2]

[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
[2]प्राचार्य, उदित नारायण पी.जी. कॉलेज, पड़रौना, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय राजनैतिक दर्शन की ऐतिहासिकता को आधार मानते हुए यह शोध पत्र कूटनीति, युद्ध और अंतरराज्यीय संबंधों जैसे समकालीन विषयों का शास्त्रीय भारतीय राजनैतिक संस्कृति एवं प्रतिमानों के आधार पर एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो मुख्य रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र, महाभारत के शांति पर्व, कामंडक के नीतिसार तथा शुक्रनीति में वर्णित विचारों पर आधारित है। केंद्रीय रूप से यह अध्ययन मानता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार ने जो एक उत्कृष्ट, बहुस्तरीय यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, वह पश्चिमी शास्त्रीय यथार्थवाद से 1000 वर्ष से भी अधिक पूर्व का है। राजमण्डल सिद्धांत, राज्य शक्ति के सप्तांग मॉडल और षड्गुण्य नीति का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन एक ऐसी विश्वदृष्टि को प्रस्तुत करता है, जहाँ राज्य का संरक्षण और धर्म की स्थापना दण्ड-नीति (शासन) के अभ्यास के माध्यम से एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यह शोध आगे धर्म-युद्ध और कूट/भ्रामक युद्ध के बीच उपस्थित नैतिक तनाव की भी जाँच करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि एक अराजक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में अस्तित्व की व्यावहारिक आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए रणनीतिक विचार कैसे विकसित हुए। अंततः यह शोध पत्र 1962 के चीन-भारत युद्ध और आधुनिक बहु-संरेखित कूटनीति जैसे समकालीन भू-राजनीतिक संदर्भों पर इन स्वदेशी अवधारणाओं को लागू करके उनकी स्थायी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है। इस शोधपत्र के माध्यम से यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि भारतीय रणनीतिक संस्कृति में यथार्थवाद के साथ एक "नैतिक संतुलन" निहित है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

मुख्य शब्द : राजमण्डल सिद्धांत, अर्थशास्त्र, धर्म-युद्ध, षड्गुण्य नीति, रणनीतिक यथार्थवाद।

परिचय : प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की पृष्ठभूमि और समकालीन प्रासंगिकता

भारत प्राचीन काल से ही अपनी आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक वैभव और बौद्धिक उपलब्धियों के कारण 'सोने की चिड़िया' के रूप में प्रसिद्ध रहा है। भारतीय सभ्यता में जीवन के विभिन्न आयामों का संचालन मुख्यतः धर्म के सिद्धांतों द्वारा होता था, जो केवल धार्मिक आस्था का विषय न होकर नैतिक कर्तव्यों, सामाजिक मर्यादाओं तथा न्यायपूर्ण आचरण का मार्गदर्शक था। समय के साथ जब राज्य और शासन की संस्थाएँ विकसित हुईं, तब राजनीतिक चिंतन ने भी एक व्यवस्थित रूप धारण किया। इस संदर्भ में कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र को प्राचीन भारत का सबसे व्यवस्थित

राजनीतिक ग्रंथ माना जाता है, जिसमें शासन-व्यवस्था, कूटनीति, युद्धनीति और राज्य प्रबंधन से संबंधित सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

हालाँकि धर्म और व्यावहारिक राजनीति के बीच संतुलन की यह अवधारणा केवल अर्थशास्त्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका स्वरूप प्राचीन भारतीय महाकाव्यों–महाभारत और रामायण–में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। महाभारत में भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश तथा युद्ध के दौरान अपनाई गई रणनीतियाँ इस तथ्य को स्पष्ट करती हैं कि नैतिक आदर्शों और व्यावहारिक राजनीति के बीच संतुलन स्थापित करना शासन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता थी। इसी प्रकार रामायण में भगवान राम के चरित्र के माध्यम से राजधर्म, नैतिक नेतृत्व और जनकल्याण की अवधारणा को प्रमुखता दी गई है। बाद के समय में महात्मा गांधी ने भी 'रामराज्य' की संकल्पना के माध्यम से इसी आदर्श राज्य की परिकल्पना को पुनर्जीवित किया, जहाँ न्याय, समानता और लोककल्याण सर्वोच्च मूल्य होते हैं।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के आधुनिक सिद्धांत लंबे समय तक यूरोप-केंद्रित दृष्टिकोण से प्रभावित रहे हैं। सामान्यतः राजनीतिक यथार्थवाद की उत्पत्ति को थ्यूसीडाइड्स के पेलोपोनेसियन युद्ध के विवरण या निकोलो मैकियावेली के विचारों से जोड़ा जाता है। किंतु यह धारणा प्राचीन भारत की उस समृद्ध रणनीतिक परंपरा की उपेक्षा करती है, जिसमें राज्य शिल्प और कूटनीति के अत्यंत विकसित सिद्धांत पश्चिमी परंपरा से कई शताब्दियों पहले ही प्रतिपादित किए जा चुके थे। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत का शांति पर्व, कामन्दक का नीतिसार तथा शुक्रनीति जैसे ग्रंथ इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन भारत में राज्य और अंतरराज्यीय संबंधों के बारे में अत्यंत गहन और यथार्थवादी विचार विकसित हो चुके थे।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रस्तुत राजमण्डल सिद्धांत और सप्तांग सिद्धांत प्राचीन भारतीय राजनीतिक यथार्थवाद के महत्वपूर्ण आधार माने जाते हैं। मण्डल सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक राज्य अपने पड़ोसी राज्यों के साथ जटिल संबंधों के जाल में जुड़ा होता है, जहाँ प्रत्यक्ष पड़ोसी को स्वाभाविक प्रतिद्वंद्वी तथा उसके पड़ोसी को संभावित मित्र माना जाता है। इस प्रकार यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन और रणनीतिक गठबंधनों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। दूसरी ओर सप्तांग सिद्धांत राज्य को सात मूलभूत तत्वों–स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, बल और मित्र–के समन्वित संगठन के रूप में प्रस्तुत करता है। इन सभी तत्वों के संतुलन से ही राज्य की स्थिरता और शक्ति सुनिश्चित होती है।

यद्यपि इन सिद्धांतों में पश्चिमी यथार्थवाद के समान शक्ति और राष्ट्रीय हित को महत्व दिया गया है, फिर भी भारतीय परंपरा की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें नैतिकता और लोककल्याण को भी समान महत्व दिया गया है। जहाँ पश्चिमी यथार्थवाद अक्सर शक्ति राजनीति पर केंद्रित रहता है, वहीं भारतीय राजनीतिक चिंतन में 'धर्म' या नैतिक कर्तव्य को भी शासन और कूटनीति का एक महत्वपूर्ण आधार माना गया है। इसी कारण प्राचीन भारतीय यथार्थवाद को 'नैतिक यथार्थवाद' (Moral Realism) के रूप में भी समझा जा सकता है।

अतः इस शोध पत्र का उद्देश्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र, महाभारत के शांति पर्व तथा अन्य नीति-ग्रंथों में वर्णित राजमण्डल और सप्तांग सिद्धांतों का विश्लेषण करना तथा यह दिखाना है कि ये प्राचीन अवधारणाएँ आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति और भारत की समकालीन रणनीतिक नीति में किस प्रकार प्रासंगिक बनी हुई हैं।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा और आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों के बीच संबंधों को समझने के लिए अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण अध्ययन किए हैं। विशेष रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र को राजनीतिक यथार्थवाद की एक अत्यंत प्राचीन और व्यवस्थित अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है। कई आधुनिक विद्वानों का मानना है कि कौटिल्य के विचारों में वह यथार्थवादी दृष्टिकोण निहित है, जिसे बाद में पश्चिमी राजनीतिक विचारधारा में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

- रोजर बोएस्चे (Roger Boesche, 2002) ने अपने अध्ययन में यह तर्क दिया है कि कौटिल्य को विश्व के प्रारंभिक और महान राजनीतिक यथार्थवादियों में गिना जा सकता है। उनके अनुसार कौटिल्य ने लगभग दो सहस्राब्दियों पूर्व ही राज्य शक्ति, कूटनीति, रणनीति और शासन के उन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, जिन्हें बाद में मैकियावेली और अन्य पश्चिमी विचारकों ने विकसित किया। बोएस्चे के अनुसार कौटिल्य का राजमण्डल सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय राजनीति के एक यथार्थवादी ढाँचे को प्रस्तुत करता है, जिसमें शक्ति संतुलन, रणनीतिक गठबंधन तथा छल और कूटनीतिक साधनों के प्रयोग को राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक माना गया है।
- इसी प्रकार एल. एन. रंगराजन (L. N. Rangarajan, 1992) ने अर्थशास्त्र के अपने विश्लेषण में कौटिल्य की विदेश नीति संबंधी अवधारणाओं पर विशेष प्रकाश डाला है। उनके अनुसार मण्डल सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि अंतरराष्ट्रीय संबंध मुख्यतः भू-राजनीतिक स्थिति और शक्ति संतुलन से संचालित होते हैं। कौटिल्य के अनुसार प्रत्येक राज्य को अपने प्रत्यक्ष पड़ोसी को संभावित शत्रु और उसके पड़ोसी को संभावित मित्र के रूप में देखना चाहिए। यह सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में गठबंधन निर्माण (Alliance Formation) और शक्ति संतुलन (Balance of Power) की अवधारणाओं से काफी हद तक मेल खाता है।
- आर. पी. कांगले (R. P. Kangle) ने भी अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि अर्थशास्त्र केवल प्रशासनिक या आर्थिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह राज्य शिल्प (Statecraft) और कूटनीति का एक व्यापक और व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार कौटिल्य का दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक और यथार्थवादी है, जिसमें राज्य की सुरक्षा और स्थिरता को सर्वोच्च महत्व दिया गया है।
- बी. एन. बंद्योपाध्याय (Bandyopadhyaya) तथा बेनॉय कुमार सरकार (Benoy Kumar Sarkar) जैसे विद्वानों ने भी प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन को एक स्वतंत्र और विकसित रणनीतिक परंपरा के रूप में देखा है। उनके अनुसार भारतीय राजनीतिक विचारधारा केवल नैतिक आदर्शवाद तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें शक्ति, कूटनीति और राज्य हितों के यथार्थवादी पहलुओं को भी पर्याप्त महत्व दिया गया था।

हालाँकि इन विद्वानों ने कौटिल्य और अन्य नीति-ग्रंथों में निहित राजनीतिक यथार्थवाद का विश्लेषण किया है, फिर भी अधिकांश अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक और सैद्धांतिक व्याख्या तक सीमित रहे हैं। प्राचीन भारतीय राजनीतिक सिद्धांतों की समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति और आधुनिक रणनीतिक नीतियों के संदर्भ में प्रासंगिकता पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र राजमण्डल और सप्तांग जैसे सिद्धांतों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार आधुनिक वैश्विक राजनीति के अध्ययन में किस प्रकार महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक यथार्थवाद की वैचारिक परंपरा

भारतीय राजनीतिक चिंतन की ऐतिहासिक परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। प्राचीन भारत में राज्य, शासन और कूटनीति से संबंधित विचार केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे व्यावहारिक शासन व्यवस्था और अंतरराज्यीय संबंधों के संचालन से भी गहराई से जुड़े हुए थे। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत का शांति पर्व, कामन्दक का नीतिसार तथा शुक्रनीति जैसे ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं कि प्राचीन भारतीय विद्वानों ने राज्य-व्यवस्था, युद्ध नीति और कूटनीति के बारे में अत्यंत विकसित और व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत किए थे।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र को प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार का सबसे महत्वपूर्ण और व्यवस्थित ग्रंथ माना जाता है। इसमें शासन-प्रणाली, प्रशासन, वित्त, कूटनीति, गुप्तचर व्यवस्था तथा युद्धनीति से संबंधित विस्तृत सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य का दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक और यथार्थवादी था। उनके अनुसार राज्य की सुरक्षा, स्थिरता और विस्तार के लिए शासक को परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग करना चाहिए।

इस संदर्भ में उन्होंने साम, दान, भेद और दण्ड जैसे कूटनीतिक साधनों का उल्लेख किया है, जो राज्य के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक माने गए हैं।

इसी प्रकार महाभारत के शांति पर्व में भी शासन, राजधर्म और दण्डनीति के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है। भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को दिए गए उपदेशों में यह स्पष्ट किया गया है कि राज्य का प्रमुख उद्देश्य प्रजा की रक्षा, न्याय की स्थापना और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। शांति पर्व में 'मत्स्यन्याय' की अवधारणा के माध्यम से यह बताया गया है कि यदि राज्य और शासन व्यवस्था का अभाव हो, तो समाज में अराजकता फैल जाती है, जहाँ शक्तिशाली व्यक्ति दुर्बल का शोषण करता है। इस स्थिति से बचने के लिए राज्य और कानून की स्थापना आवश्यक मानी गई है।

कामन्दक का नीतिसार भी प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह ग्रंथ कौटिल्य के अर्थशास्त्र के कई सिद्धांतों को सरल और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है। कामन्दक ने विशेष रूप से कूटनीति, युद्धनीति और राजा के व्यक्तिगत गुणों पर बल दिया है। उनके अनुसार एक सफल शासक को न केवल बुद्धिमान और साहसी होना चाहिए, बल्कि उसे बदलती परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बनाने में भी सक्षम होना चाहिए।

इसी परंपरा में शुक्रनीति का भी विशेष महत्व है। इस ग्रंथ में शासन-व्यवस्था, प्रशासनिक संरचना और जनकल्याण से संबंधित अनेक विचार प्रस्तुत किए गए हैं। शुक्रनीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें शासन में जनमत और जनता की भावनाओं के महत्व को स्वीकार किया गया है। इसके अनुसार एक सफल शासक वही है जो अपनी प्रजा की आवश्यकताओं और समस्याओं को समझते हुए शासन का संचालन करे।

इन सभी ग्रंथों का सामूहिक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन केवल आदर्शवादी नहीं था, बल्कि उसमें गहरा यथार्थवादी दृष्टिकोण भी विद्यमान था। इन विचारों में राज्य की शक्ति, कूटनीति और रणनीतिक हितों को महत्व दिया गया है, साथ ही साथ नैतिकता और लोककल्याण को भी अनिवार्य तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। इसी कारण प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा को एक प्रकार के 'धर्म-आधारित यथार्थवाद' (Dharma-based Realism) के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ शक्ति और नैतिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

सप्तांग सिद्धांत : राज्य का जैविक स्वरूप और संरचनात्मक संतुलन

प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन में राज्य को केवल एक प्रशासनिक या कानूनी संस्था के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे एक जीवित और सावयव इकाई (Organic Entity) के रूप में समझा गया है। कौटिल्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र में राज्य की संरचना को सात प्रमुख अंगों या 'प्रकृतियों' के माध्यम से स्पष्ट किया है, जिन्हें सामूहिक रूप से सप्तांग सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य की स्थिरता और शक्ति किसी एक तत्व पर निर्भर नहीं होती, बल्कि उसके सभी अंगों के संतुलित और समन्वित संचालन पर आधारित होती है।

कौटिल्य के अनुसार राज्य के सात मूलभूत अंग हैं– स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, बल और मित्र। ये सभी तत्व मिलकर राज्य की संपूर्ण संरचना का निर्माण करते हैं और प्रत्येक अंग का अपना विशिष्ट कार्य तथा महत्व होता है। यदि इन अंगों में से किसी एक की भी स्थिति कमजोर हो जाए, तो उसका प्रभाव पूरे राज्य तंत्र पर पड़ सकता है।

सप्तांग सिद्धांत में स्वामी अर्थात राजा को राज्य का केंद्रीय तत्व माना गया है। कौटिल्य के अनुसार एक आदर्श शासक केवल सत्ता का धारक नहीं होता, बल्कि वह अनुशासित, आत्मसंयमी और दूरदर्शी होना चाहिए। उन्होंने 'इन्द्रियजय' अर्थात अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण को एक सफल शासक का आवश्यक गुण बताया है। महाभारत के शांति पर्व में भी इसी विचार को व्यक्त करते हुए कहा गया है– "प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्", अर्थात राजा का सुख प्रजा के सुख में निहित होता है। इस प्रकार शासक का कर्तव्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि प्रजा के हित और कल्याण की रक्षा करना भी है।

अमात्य अर्थात मंत्री और प्रशासनिक अधिकारी राज्य की कार्यप्रणाली के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। कौटिल्य ने मंत्रियों की नियुक्ति के लिए योग्यता, निष्ठा और नैतिक चरित्र को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। उन्होंने 'उपधा परीक्षण' की व्यवस्था का उल्लेख किया है, जिसके माध्यम से अधिकारियों की निष्ठा और ईमानदारी की परीक्षा की जाती थी। आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में योग्यता आधारित नौकरशाही (Merit-based Bureaucracy) और भ्रष्टाचार विरोधी संस्थाओं की अवधारणा इसी प्रकार की प्रशासनिक शुचिता की आवश्यकता को दर्शाती है।

जनपद राज्य के भौगोलिक क्षेत्र और उसकी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। कौटिल्य के अनुसार राज्य का क्षेत्र उपजाऊ, सुरक्षित और संसाधनों से संपन्न होना चाहिए, जबकि उसकी जनता परिश्रमी और अनुशासित होनी चाहिए। इसी प्रकार कोष अर्थात राजकोष को राज्य की आर्थिक शक्ति का आधार माना गया है। बिना पर्याप्त वित्तीय संसाधनों के न तो प्रशासन का संचालन संभव है और न ही सेना का पोषण या जनकल्याणकारी कार्यों का क्रियान्वयन।

दुर्ग और बल राज्य की सुरक्षा और सैन्य शक्ति से संबंधित अंग हैं। दुर्ग का अर्थ केवल किले या सुरक्षा संरचनाओं से नहीं है, बल्कि वह राज्य की समग्र रक्षा व्यवस्था का प्रतीक है। बल अर्थात सेना राज्य की संप्रभुता की रक्षा करती है और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करती है। कौटिल्य के अनुसार एक संगठित और अनुशासित सेना राज्य की स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सप्तांग सिद्धांत का अंतिम अंग मित्र है, जो राज्य के बाहरी संबंधों और कूटनीतिक गठबंधनों को दर्शाता है। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राज्य की शक्ति केवल उसकी आंतरिक संरचना पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके अंतरराष्ट्रीय संबंध और सहयोगी भी उसकी शक्ति को प्रभावित करते हैं। इसलिए एक बुद्धिमान शासक को अपने हितों के अनुरूप मित्र राष्ट्रों के साथ सहयोग और संतुलन बनाए रखना चाहिए।

इस प्रकार सप्तांग सिद्धांत राज्य की एक समग्र और संतुलित संरचना को प्रस्तुत करता है, जिसमें शासन, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और कूटनीति जैसे सभी महत्वपूर्ण तत्वों का समन्वय दिखाई देता है। यह सिद्धांत न केवल प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की गहराई को दर्शाता है, बल्कि आधुनिक शासन व्यवस्था और राज्य प्रबंधन की अवधारणाओं के साथ भी उल्लेखनीय समानता रखता है।

राजमण्डल सिद्धांत : भू-राजनीतिक यथार्थवाद और कूटनीति

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में अंतरराज्यीय संबंधों को समझने के लिए कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राजमण्डल सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय राजनीति की वास्तविकताओं को स्पष्ट करते हुए यह दर्शाता है कि राज्यों के बीच संबंध केवल नैतिक आदर्शों से नहीं, बल्कि भौगोलिक स्थिति, शक्ति संतुलन और राष्ट्रीय हितों से भी निर्धारित होते हैं। कौटिल्य ने इस सिद्धांत के माध्यम से राज्य और उसके पड़ोसी राज्यों के बीच संबंधों की एक व्यवस्थित और यथार्थवादी व्याख्या प्रस्तुत की है।

राजमण्डल सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक राज्य अपने चारों ओर स्थित अन्य राज्यों के साथ एक जटिल संबंध प्रणाली में जुड़ा होता है। इस व्यवस्था में केंद्रीय राज्य को "विजिगीषु" कहा गया है, अर्थात वह राजा जो अपनी शक्ति और प्रभाव का विस्तार करना चाहता है। कौटिल्य के अनुसार विजिगीषु राज्य के दृष्टिकोण से उसका प्रत्यक्ष पड़ोसी स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु माना जाता है, जबकि उस शत्रु का पड़ोसी उसके लिए संभावित मित्र हो सकता है। इस प्रकार यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति संतुलन और रणनीतिक गठबंधनों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

राजमण्डल सिद्धांत में कुल बारह प्रकार के राज्यों का उल्लेख मिलता है, जो विभिन्न प्रकार के मित्र, शत्रु, मध्यस्थ और तटस्थ राज्यों को दर्शाते हैं। इन राज्यों के बीच संबंध स्थायी नहीं होते, बल्कि परिस्थितियों, हितों और शक्ति संतुलन के आधार पर निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं। इस दृष्टि से कौटिल्य का यह सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति के उस विचार से मेल खाता है कि राज्यों के बीच स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होते, बल्कि केवल स्थायी हित होते हैं।

कौटिल्य ने राज्य की विदेश नीति को संचालित करने के लिए षड्गुण नीति का भी प्रतिपादन Zqकिया है, जिसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के रणनीतिक उपकरणों के रूप में समझा जा सकता है। इसमें छह प्रमुख नीतियाँ शामिल हैं– सन्धि (शांति समझौता), विग्रह (संघर्ष या युद्ध), आसन (तटस्थता), यान (सैन्य तैयारी या अभियान), संश्रय (शक्तिशाली राज्य का आश्रय लेना) तथा द्वैधीभाव (दोहरी नीति)। इन नीतियों का प्रयोग शासक को अपनी शक्ति, परिस्थिति और शत्रु की स्थिति के अनुसार करना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यदि शत्रु अधिक शक्तिशाली हो तो शासक को सन्धि या तटस्थता की नीति अपनानी चाहिए, जबकि यदि अपनी स्थिति मजबूत हो तो विग्रह या सैन्य अभियान का विकल्प अपनाया जा सकता है। इसी प्रकार संश्रय और द्वैधीभाव जैसी नीतियाँ कूटनीतिक संतुलन और रणनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए उपयोगी मानी गई हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में प्रयुक्त संतुलन की राजनीति (Balance of Power) तथा रणनीतिक गठबंधन (Strategic Alliances) की अवधारणाओं के समान प्रतीत होता है।

राजमण्डल सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि इसमें अंतरराष्ट्रीय संबंधों को तार्किक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। मित्र और शत्रु के संबंधों को परिस्थितियों और हितों के आधार पर परिभाषित किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य का राजनीतिक चिंतन अत्यंत व्यावहारिक और यथार्थवादी था।

इस प्रकार राजमण्डल सिद्धांत प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा में अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक व्यवस्थित ढांचा प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत न केवल उस समय की भू-राजनीतिक परिस्थितियों को समझने में सहायक था, बल्कि आज के जटिल वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन, रणनीतिक गठबंधन और कूटनीतिक संतुलन जैसी अवधारणाएँ इस सिद्धांत की स्थायी उपयोगिता को दर्शाती हैं।

महाभारत का शान्ति पर्व : शासन की नैतिकता और राजधर्म

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में महाभारत का विशेष महत्व है, विशेषकर इसका शान्ति पर्व, जिसमें शासन, राजधर्म और राज्य के नैतिक आधारों की विस्तृत व्याख्या की गई है। कुरुक्षेत्र के युद्ध के पश्चात जब युधिष्ठिर राज्य संचालन के दायित्व को लेकर चिंतित होते हैं, तब भीष्म पितामह उन्हें शासन, न्याय और दण्डनीति से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण उपदेश देते हैं। ये उपदेश न केवल प्राचीन भारतीय शासन प्रणाली की समझ प्रदान करते हैं, बल्कि आज के सुशासन (Good Governance) और नैतिक नेतृत्व (Ethical Leadership) की अवधारणाओं के साथ भी गहरा संबंध रखते हैं।

शान्ति पर्व में राज्य की उत्पत्ति और उसके उद्देश्य को समझाने के लिए 'मत्स्यन्याय' की अवधारणा का उल्लेख मिलता है। मत्स्यन्याय का अर्थ है वह स्थिति जिसमें शक्तिशाली व्यक्ति कमजोर का शोषण करता है, जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। इस प्रकार की अराजक स्थिति से बचने के लिए समाज ने एक संगठित सत्ता की आवश्यकता को स्वीकार किया और एक शासक की स्थापना की, जिसका प्रमुख दायित्व समाज में व्यवस्था, न्याय और सुरक्षा बनाए रखना था। इस विचार को सामाजिक अनुबंध (Social Contract) की प्रारंभिक अवधारणा के रूप में भी देखा जा सकता है, जो बाद में पश्चिमी राजनीतिक चिंतन में थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो जैसे विचारकों द्वारा विकसित की गई।

शान्ति पर्व में राजधर्म की अवधारणा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसके अनुसार शासक का मुख्य कर्तव्य प्रजा की रक्षा करना, न्याय की स्थापना करना और समाज में धर्म अर्थात नैतिक व्यवस्था को बनाए रखना है। भीष्म के अनुसार राजा को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और स्वार्थों से ऊपर उठकर शासन करना चाहिए। उनका यह कथन कि

"प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्" यह स्पष्ट करता है कि शासक का सुख और हित उसकी प्रजा के सुख और हित में निहित होता है।

इसके अतिरिक्त शान्ति पर्व में भीष्म ने शासक के लिए अनेक नैतिक गुणों का उल्लेख किया है। उन्होंने राजा को न्यायप्रिय, संयमी, धैर्यवान और दूरदर्शी होने की सलाह दी है। राजा को उदार होना चाहिए, परंतु अपव्ययी नहीं; उसे दण्ड देना चाहिए, परंतु क्रूरता के साथ नहीं। इस प्रकार शासन में संतुलन, विवेक और नैतिकता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

महाभारत में दण्डनीति को भी शासन का एक आवश्यक साधन माना गया है। दण्ड का अर्थ केवल दंड या सजा नहीं है, बल्कि वह सामाजिक अनुशासन और व्यवस्था को बनाए रखने का माध्यम है। भीष्म के अनुसार यदि राज्य में दण्ड व्यवस्था का उचित पालन नहीं किया जाए, तो समाज में अराजकता और अन्याय फैल सकता है। इसलिए राजा को न्यायपूर्ण और निष्पक्ष दण्ड व्यवस्था का पालन करना चाहिए, ताकि कानून के समक्ष सभी समान हों।

इस प्रकार महाभारत का शान्ति पर्व शासन की नैतिकता, न्याय और उत्तरदायित्व की एक व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसमें शक्ति और नैतिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास दिखाई देता है। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में राजधर्म की अवधारणा केवल सत्ता के प्रयोग तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह जनकल्याण, न्याय और सामाजिक व्यवस्था की स्थापना से भी गहराई से जुड़ी हुई थी।

कामन्दक और शुक्रनीति : राजनीतिक यथार्थवाद का विस्तार

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य के बाद जिन नीति-ग्रंथों ने राज्यशास्त्र और कूटनीति के सिद्धांतों को आगे विकसित किया, उनमें कामन्दक की नीतिसार और शुक्रनीति का विशेष स्थान है। इन ग्रंथों में शासन, कूटनीति, राज्यसुरक्षा और नैतिक शासन के अनेक सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन मिलता है। ये ग्रंथ यह दर्शाते हैं कि भारतीय राजनीतिक परंपरा में राज्य संचालन और अंतरराज्यीय संबंधों पर गंभीर और व्यवस्थित चिंतन किया गया था।

कामन्दक की नीतिसार को प्रायः कौटिल्य की परंपरा का विस्तार माना जाता है। इस ग्रंथ में राज्य की सुरक्षा, कूटनीति, सैन्य रणनीति तथा मित्र और शत्रु के साथ संबंधों के व्यावहारिक पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। कामन्दक ने भी राजमण्डल सिद्धांत और षड्गुण नीति की अवधारणाओं को स्वीकार किया है और उन्हें अधिक व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार शासक को परिस्थितियों के अनुसार अपनी नीतियों में लचीलापन रखना चाहिए और राज्यहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए।

कामन्दक ने यह भी स्पष्ट किया है कि सफल शासन केवल शक्ति पर आधारित नहीं होता, बल्कि उसमें बुद्धिमत्ता, कूटनीतिक कौशल और दूरदर्शिता का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके विचारों में राजनीतिक यथार्थवाद और नैतिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास दिखाई देता है। इस प्रकार नीतिसार राज्य संचालन के व्यावहारिक पक्ष को समझने में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।

इसी प्रकार शुक्रनीति भी प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें प्रशासन, न्याय, आर्थिक प्रबंधन और सामाजिक व्यवस्था से संबंधित अनेक सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। इस ग्रंथ में राज्य को एक संगठित संस्था के रूप में देखा गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में व्यवस्था, न्याय और सुरक्षा बनाए रखना है।

शुक्रनीति में शासक के गुणों, प्रशासनिक संरचना और अधिकारियों के कर्तव्यों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि राजा को न्यायप्रिय, अनुशासित और प्रजाहितैषी होना चाहिए। साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों के चयन में योग्यता, निष्ठा और नैतिकता को महत्वपूर्ण माना गया है।

इन दोनों ग्रंथों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन केवल सैद्धांतिक आदर्शों तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें शासन और कूटनीति के व्यावहारिक पक्षों का भी गहन विश्लेषण किया गया था। कौटिल्य, कामन्दक और

शुक्रनीति की परंपरा मिलकर एक ऐसी राजनीतिक दृष्टि प्रस्तुत करती है जिसमें शक्ति, कूटनीति, नैतिकता और जनकल्याण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय यथार्थवाद बनाम पश्चिमी यथार्थवाद

राजनीतिक यथार्थवाद (Political Realism) अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो यह मानता है कि राज्य मुख्य रूप से अपने राष्ट्रीय हित, शक्ति और सुरक्षा के आधार पर कार्य करते हैं। पश्चिमी राजनीतिक चिंतन में यथार्थवाद को व्यवस्थित रूप से विकसित करने का श्रेय प्रायः Niccolò Machiavelli, Thomas Hobbes तथा आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतकार Hans J. Morgenthau को दिया जाता है। हालांकि यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए, तो प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में भी यथार्थवाद के अनेक तत्व स्पष्ट रूप से विद्यमान थे।

भारतीय परंपरा में कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीतिक यथार्थवाद का एक अत्यंत विकसित और व्यवस्थित उदाहरण प्रस्तुत करता है। कौटिल्य ने राज्य की सुरक्षा, शक्ति संतुलन, कूटनीति और रणनीतिक गठबंधनों को अत्यंत व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझाया है। उनके द्वारा प्रतिपादित राजमण्डल सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि अंतरराज्यीय संबंध मुख्य रूप से शक्ति और भू-राजनीतिक परिस्थितियों से निर्धारित होते हैं। इस दृष्टि से कौटिल्य का विचार आधुनिक यथार्थवादी सिद्धांतों से काफी हद तक मेल खाता है।

पश्चिमी यथार्थवाद में Niccolò Machiavelli ने अपनी प्रसिद्ध कृति The Prince में यह तर्क दिया कि शासक को राज्य की सुरक्षा और स्थिरता के लिए कभी-कभी नैतिक सीमाओं से परे जाकर भी निर्णय लेने पड़ सकते हैं। इसी प्रकार Thomas Hobbes ने मानव स्वभाव को स्वार्थी और प्रतिस्पर्धी बताते हुए यह कहा कि अराजक स्थिति में शक्ति संघर्ष अपरिहार्य हो जाता है। आधुनिक यथार्थवाद के प्रमुख सिद्धांतकार Hans J. Morgenthau ने भी यह तर्क दिया कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति मुख्य रूप से शक्ति की खोज और राष्ट्रीय हितों से संचालित होती है।

हालाँकि भारतीय और पश्चिमी यथार्थवाद के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी दिखाई देते हैं। पश्चिमी यथार्थवाद मुख्य रूप से शक्ति और हितों पर केंद्रित रहा है, जबकि भारतीय राजनीतिक चिंतन में शक्ति के साथ-साथ धर्म, नैतिकता और राजधर्म को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उदाहरण के लिए, महाभारत के शान्ति पर्व में शासक के लिए न्याय, संयम और प्रजाहित को अत्यंत आवश्यक गुण माना गया है। इसी प्रकार कौटिल्य ने भी राज्यहित को सर्वोपरि मानते हुए शासक को यह सलाह दी है कि वह शक्ति और नीति का प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से करे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में यथार्थवाद और नैतिकता के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। भारतीय परंपरा में राज्य की शक्ति और सुरक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है, परंतु इसके साथ-साथ शासन के नैतिक और सामाजिक दायित्वों पर भी समान रूप से बल दिया गया है। यही संतुलन भारतीय राजनीतिक विचारधारा को पश्चिमी यथार्थवाद से भिन्न और विशिष्ट बनाता है।

समकालीन प्रासंगिकता

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन केवल ऐतिहासिक महत्व का विषय नहीं है, बल्कि इसकी अनेक अवधारणाएँ आज की वैश्विक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने में भी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। विशेष रूप से कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राजमण्डल सिद्धांत और षड्गुण नीति आज भी अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और रणनीतिक नीतियों के विश्लेषण में प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

आधुनिक विश्व में राज्य अपनी सुरक्षा, शक्ति संतुलन और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के कूटनीतिक और रणनीतिक उपाय अपनाते हैं। यह दृष्टिकोण उस यथार्थवादी विचारधारा के अनुरूप है, जिसे बाद में पश्चिमी

विचारकों जैसे Hans J. Morgenthau और Kenneth Waltz ने व्यवस्थित रूप से विकसित किया। किंतु यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए, तो इन सिद्धांतों के कई तत्व प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में पहले से ही विद्यमान थे।

उदाहरण के लिए, राजमण्डल सिद्धांत में पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों को शक्ति संतुलन और रणनीतिक हितों के आधार पर समझाया गया है। आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी गठबंधन निर्माण, सामरिक साझेदारी और कूटनीतिक संतुलन जैसे उपाय इसी प्रकार के सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करते हैं। इसी प्रकार षड्गुण नीति में वर्णित सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय और द्वैधीभाव जैसी नीतियाँ आधुनिक कूटनीतिक रणनीतियों के साथ काफी हद तक मेल खाती हैं।

इसके अतिरिक्त महाभारत के शान्ति पर्व में वर्णित राजधर्म और सुशासन की अवधारणाएँ भी आज के लोकतांत्रिक शासन और उत्तरदायी नेतृत्व के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। न्याय, प्रजाहित और नैतिक नेतृत्व पर दिया गया बल यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में सत्ता के साथ-साथ नैतिक उत्तरदायित्व को भी महत्वपूर्ण माना गया था।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा में निहित सिद्धांत केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक वैश्विक राजनीति और शासन के अध्ययन में भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन राज्य, शासन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के लिए एक समृद्ध और गहन परंपरा प्रस्तुत करता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत का शान्ति पर्व, तथा कामन्दक और शुक्रनीति जैसे ग्रंथ यह दर्शाते हैं कि प्राचीन भारत में राजनीतिक सिद्धांतों पर गंभीर और व्यवस्थित विचार किया गया था।

इन ग्रंथों में राज्य की शक्ति, कूटनीति, प्रशासन और न्याय से संबंधित अनेक सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है। विशेष रूप से राजमण्डल सिद्धांत और षड्गुण नीति यह स्पष्ट करते हैं कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में यथार्थवादी दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण स्थान था। यह दृष्टिकोण आधुनिक यथार्थवादी विचारधारा से कई मायनों में मेल खाता है, जिसे पश्चिमी विचारकों जैसे Niccolò Machiavelli और Hans J. Morgenthau ने आगे विकसित किया।

हालाँकि भारतीय राजनीतिक परंपरा की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें शक्ति और यथार्थवाद के साथ-साथ नैतिकता और राजधर्म को भी समान महत्व दिया गया है। प्राचीन भारतीय चिंतकों ने शासन को केवल शक्ति के प्रयोग के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे जनकल्याण, न्याय और सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के साधन के रूप में भी समझा। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा में यथार्थवाद और नैतिकता के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। यही संतुलन भारतीय राजनीतिक चिंतन को विशिष्ट बनाता है और आधुनिक राजनीतिक अध्ययन के लिए भी इसे अत्यंत प्रासंगिक बनाता है।

संदर्भ सूची

1. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन. (2023). शास्त्र नीति और शस्त्र नीति: भारतीय रणनीतिक चिंतन की प्राचीन जड़ें।
2. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी. (2024). समकालीन भू-राजनीति में कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत का अनुप्रयोग।

3. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी. (2024). प्राचीन राज्यकला और आधुनिक रणनीति: भारत की विदेश नीति में मण्डल सिद्धांत का विश्लेषण।
4. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्पररी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी. (2024). राजधर्म से विधि के शासन तक: आधुनिक शासन में कौटिल्य की विधिक दर्शन।
5. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च रिव्यू. (2024). भारतीय राजनीतिक चिंतन में धर्म की भूमिका।
6. इंस्टीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज़ एंड एनालिसिस. (2019). कामन्दक के नीतिसार और कौटिल्य के अर्थशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन।
7. इंस्टीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज़ एंड एनालिसिस. (2019). कौटिल्य के अर्थशास्त्र के माध्यम से राज्यकला में धर्म और अर्थ की समझ।
8. कमल, काजरी. (2023). कौटिल्य का अर्थशास्त्र: भारत की समकालीन राज्यकला की रणनीतिक सांस्कृतिक जड़ें. लंदन: रूटलेज।
9. कौटिल्य. (1915). अर्थशास्त्र (आर. शामाशास्त्री, अनुवादक). मैसूर: गवर्नमेंट प्रेस।
10. कामन्दक. (अ.वि.). नीतिसार।
11. गौतम, पी. (2021). यूरोकेन्द्रवाद से परे: कौटिल्य का यथार्थवाद और भारत की क्षेत्रीय कूटनीति।
12. चौधरी, एस. (2022). कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुशासन का विश्लेषण. मिजोरम यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज़।
13. नेपाल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़. (2024). कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सप्तांग राज्य सिद्धांत का अध्ययन।
14. नासाओ जर्नल. (2023). राजमण्डल सिद्धांत और भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंध।
15. पॉलसाइंस इंस्टिट्यूट. (2023). अंतरराष्ट्रीय संबंधों में यथार्थवाद के विभिन्न रूप।
16. पॉलिटिक्स फॉर इंडिया. (2023). अंतरराष्ट्रीय संबंधों में यथार्थवादी दृष्टिकोण।
17. विकिपीडिया योगदानकर्ता. (2024). नीतिसार. विकिपीडिया।
18. विकिपीडिया योगदानकर्ता. (2024). शान्ति पर्व. विकिपीडिया।
19. व्यास. (अ.वि.). महाभारत: शान्ति पर्व।
20. शर्मा, आर. (2023). कौटिल्य का सप्तांग राज्य सिद्धांत और उसकी समकालीन प्रासंगिकता।